त्रिविध बुद्ध वैशाख पूर्णिमा : बुद्ध की वैश्विक समुदाय को देन

डॉ शालिनी सिंघल,
(सह-प्राध्यापक, इतिहास विभाग)
कॉलेज ऑफ वोकेशनल स्टडीज,
दिल्ली विश्वविद्यालय

सारांश:

त्रिविध बुद्ध वैशाख पूर्णिमा का महत्त्व पालि त्रिपिटक साहित्य में सम्पूर्ण वैश्विक समुदाय के लिये एक विरासत हैं। यह दिवस भगवान बुद्ध के जीवन काल से संबंधित महत्वपूर्ण तीन घटनाओं को परिलक्षित करता हैं। जिसमें सिद्धार्थ गौतम का जन्म, बुद्धत्व की प्राप्ति, तथा महापरिनिर्वाण प्रमुख है। ये तीनों घटनाएँ और भगवान बुद्ध का धम्म (शिक्षाएँ) का उपदेश यथा- शील, समाधि, प्रज्ञा इत्यादि जिससे सम्पूर्ण मानवजाति के भौतिक जीवन से लेकर पारलोकीय जीवन में दुखों से मुक्ति का मार्ग हैं। जिसे अपनाकर साधक अपने जीवन को मूल्यपरक बनाकर अपने लक्ष्य (निर्वाण) की प्राप्ति कर सकता हैं। यह शोधपत्र का आधार पालि त्रिपिटक साहित्य (मूल) और द्वितीयक स्त्रोत के रूप में विपश्यना विशोधन विन्यास, ईगतपुरी, नासिक के पालि एवं अनुपिटक साहित्य हैं।

मुख्य शब्द:

त्रिविध बुद्ध वैशाख पूर्णिमा, शील, समाधि, प्रज्ञा, निर्वाण, महापरिनिर्वाण, पारमी, धम्म ।

(English translation of abstract)

Threefold Buddha Vaishakh Purnima: Buddha's gift to the global community

Abstract: The significance of the threefold Buddha Vaishakh Purnima in Pali Tripitaka literature is a legacy for the entire global community. This day reflects three important events related to the life of Lord Buddha. In which the birth of Siddhartha Gautama, the attainment of Buddhahood, and the Mahaparinirvana are prominent. All these three events and the teachings of Lord Buddha's Dhamma (teachings) such as- Sheel, Samadhi, Prajna, etc., which are the path to liberation from the sufferings of the entire human race from physical life to worldly life. By adopting which the seeker can make his life valuable and achieve his goal (Nirvana). The basis of this research paper is Pali Tripitaka literature (original) and Vipassana Visodhana Vinyasa, Igatpuri, Nashik's Pali and Anupitaka literature as secondary sources.

Key Words: Threefold Buddha Vaishakh Purnima, Sheel, Samadhi, Prajna, Nirvana, Mahaparinirvana, Parami, Dhamma.

आज से लगभग 2600 वर्ष पूर्व सिद्धार्थ गौतम ने अपने अथक परिश्रम के द्वारा चार असंख्य और एक लाख कल्प तक 'पारमी' के संकल्प को 'बोधिसत्व' के रूप में पालन करते हुए अपने तीक्ष्ण प्रज्ञा-द्वारा प्रकृति में विलुप्त विपश्यना ध्यान साधना विधि का पुन: अनुसन्धान कर 'बुद्धत्व' को प्राप्त किया तथा 'सम्यक् बुद्ध' बनें। और इसके पश्चात *"चरथ*

1

भिक्खवे चारिकं बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय लोकानुकंपाय अत्थाय हिताय सुखाय देव मनुस्सानं । देसेथ भिक्खवे धम्मं आदिकल्याण मंझे कल्याणं परियोसान कल्याणं सात्थं सव्यंजनं केवल परिपुन्नं परिसुद्धं ब्रहमचरियं पकासेथ।" अर्थात् भिक्खुओं, बहुत जनों के हित के लिए, बहुत जनों के सुख के लिए, लोक पर दया करने के लिए विचरण करो! आदि-मध्य-और अन्त सभी अवस्थाओं के लिये कल्याणमय धर्म का भाव और आचरण- सहित प्रकाश करते रहो ! इस भावना से अभिप्रेरित लगातार 45 वर्षों यानी अपने महापरिनिर्वाण तक इहलोक और परलोक के सम्पूर्ण जीव-जंतुओं के दुखों से मुक्ति और लोक कल्याण के लिये धम्म को उपदेशित करते रहें।

वस्तुत: त्रिविध बुद्ध वैशाख पूर्णिमा का महत्त्व इस प्रकार हैं, कि प्रथम घटना के रूप में, जब महारानी महामाया राजधानी कपिलवस्तु से अपने मायके की यात्रा कर रही थी तब रास्ते में लुम्बिनी वन में साल वृक्ष के नीचे वैशाख पूर्णिमा, मई के महीने में इस दिन एक बच्चे को जन्म दिया जिसका नाम सिद्धार्थ रखा गया। जातक कथानुसार पूर्व में जन्मे दीपांकर बुद्ध की भविष्यवाणी प्रतिफलित हुई। दीपांकर बुद्ध ने कहा था, कि यह सुमित नामक ब्राह्मण भद्र कल्प में बुद्ध बनेगा। फिर दुतीयक घटना, 35 वर्ष की अवस्था में अपने अथक प्रयत्न से इसी दिन वैशाख पूर्णिमा, मई के महीने में बोधगया के बोधि वृक्ष के नीचे बुद्धत्व यानी सम्यक ज्ञान को प्राप्त किया। उसके पश्चात तृतीय घटना, लोक कल्याण हेतु लगातार पैंतालीस वर्षों तक धम्म को उपदेशित करते रहे और 80 वर्ष की पकी हुई अवस्था में इसी दिन वैशाख पूर्णिमा, मई के महीने में महापरिनिर्वाण को प्राप्त हुए। इसलिए ये तीनों घटनाएँ पालि साहित्य में बहुत ही महत्वकारी हैं।

चूंकि बुद्ध के आगमन से 'धम्म' का पुनः सृजन हुआ तथा धम्म का पुनर्शोधन और पुनर्परिभाषित किया। फलस्वरूप लोक कल्याण की भावना से अभिप्रेरित 'धम्म' का प्रसार-प्रचार किया, जिससे ब्रहमाण्ड के समस्त प्राणी अपने-अपने सुख-शांति तथा निर्वाण की ओर अग्रसर होने लगे।

'धम्म' की प्रकृति को बताते हुए बुद्ध ने कहा कि-

"एस धम्मो सनंतनो"

अर्थात् धम्म का स्वरुप या प्रकृति हर समय, हर काल में सदैव सनातन होता हैं अर्थात् एक जैसा होता हैं। जो कार्य-कारण सिद्धांत पर अवलंबित होता हैं।

बुद्धत्व प्राप्ति के पश्चात भगवान बुद्ध के प्रथम वाणी हर्षोल्लाश के साथ यह उदान कहते हैं:

अनेकजातिसंसारं, सन्धाविस्सं अनिब्बिसं।

गहकारं गवेसन्तो, दुक्खा जाति पुनप्पुनं॥

गहकारक दिट्ठोसि, पुन गेहं न काहसि।

सब्बा ते फासुका भग्गा, गहकूटं विसङ्खतं।

विसङ्खारगतं चित्तं, तण्हानं खयमज्झगा॥

अर्थात् (इस काया-रूपी) घर को बनाने वाले की खोज में (मैं) बिना रुके अनेक जन्मों तक भव- संसरण करता रहा, किंतु बार बार दुःख मय जन्म ही हाथ लगे । ऐ घर बनाने वाले ! (अब) तू देख लिया गया हैं, (अब) फिर (तू) (नया) घर नहीं बना सकता । तेरी सारी कड़ियां टूट गयी हैं और घर का शिखर भी विशृंखलित हो गया हैं । चित्त पुरी तरह संस्काररहित हो गया हैं और तृष्णाओं का क्षय (निर्वाण) प्राप्त हो गया है ।

इसके बाद अपने संग्रहीत अपरिमित धर्म-बल से इन दस सहस्र चक्रवालों को देखते हुए यह उद्घोष करते हैं-

अग्गोहमस्मि लोकस्स - लोक में मैं अग्र हूँ।
जेट्ठोहमस्मि लोकस्स - लोक में मैं ज्येष्ठ हूँ।
सेट्ठोहमस्मि लोकस्स - लोक में मैं श्रेष्ठ हूँ।
अयमन्तिमा जाति- यह मेरा अंतिम जन्म है।
नत्थि दानि पुनब्भवो- अब मेरा पुनर्जन्म नहीं होगा।

भगवान बुद्ध अपने मध्यम वाणी के अंतर्गत कहते हैं कि- *"एहिपस्सिको"* यानि आओं और देखों। भगवान बुद्ध का धम्म इतना वैज्ञानिक हैं, कि अभी आओं, देखों, चखो। यह विज्ञान की प्रयोगशाला की भांति है। तुरंत फलदायी हैं। जो कार्य-कारण सिद्धांत पर आधारित हैं। बुद्ध कहते हैं कि कार्य तुम्हे ही करना पड़ेगा, मार्ग कोई बता सकता है:-

"तुम्हेहि किच्चं आतप्पं, अक्खातारो तथागता।

पटिपन्ना पमोक्खन्ति, झायिनो मारबन्धना।।"

अर्थात् कार्य के लिए तुम्हें ही उद्योग करना है, तथागतों का कार्य तो मार्ग आख्यात करना है। मार्ग पर आरूढ हो, ध्यान में रत, (पुरुष) के बन्धन से मुक्त हो जाता है।

अंत में, भगवान बुद्ध शरीर छोड़ने के पहले अर्थात् महापरिनिर्वाण के पहले उनकी अंतिम वाणी थी, जो सम्पूर्ण वैश्विक समुदाय के लिये एक विरासत हैं। महाकारुणिक भगवान बुद्ध के अंतिम वचन (पश्चिम वाचा)-

"हंद दानी भिक्खवे, आमन्तयामी वो।

वय धम्मा संखारा, अप्पमादेन सम्पादेथ।।"

अर्थात् हे भिक्षुओं, मैं तुम्हें आमंत्रित करता हूँ। सभी प्रकार के संस्कार व्यय धर्म है। अर्थात् जो चीजे, वस्तुएँ, घटनाएँ, परिस्थितियां उत्पन्न होती है, वह उसी क्षण नष्ट भी हो जाती है। अत: अप्रमाद (अथक परिश्रम) होकर अपने लक्ष्य का संपादन कर लो।

बुद्ध वाणी के परिणामस्वरूप तत्कालीन समय में समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार के नकारात्मक प्रथाएँ जैसे: वर्ण व्यवस्था, जाति व्यवस्था, धार्मिक अंधविश्वास तथा कर्मकांड, अप्राकृतिक एवं अवैज्ञानिकता, बलि एवं यज्ञ प्रथा, भाग्यवाद एवं आशीर्वाद वाद, सामाजिक असमानता के खिलाफ एक धार्मिक क्रांति, बौद्धिक क्रांति, वैज्ञानिक चेतन की थी और जिससे वैश्विक समाज में आमूलचूल बदलाव आए थे तथा दूरगामी परिणाम आए और बुद्ध के धम्म को संस्थापित किया।

इस तरह भगवान बुद्ध के जीवन से संबंधित तीन घटनाएँ जो त्रिविध बुद्ध वैशाख पूर्णिमा के रूप में जाना जाता हैं और उनकी सम्यक धम्म (शिक्षा) सम्पूर्ण वैश्विक समुदाय के लिए विरासत हैं। उनका धम्म उपदेश सम्पूर्ण इहलोक भौतिक जीवन से लेकर पारलोकीय जीवन में दुखों से मुक्ति का मार्ग हैं, जिसे हम अनुकरण कर अपने जीवन को सुख-शांति से समृद्ध कर सकते हैं। वस्तुत: ये तीनों घटनाएँ त्रिविध बुद्ध वैशाख पूर्णिमा को सिद्ध करती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. दीघनिकाय 2.1.31
2. महावग्गपालि, धम्मचक्कपवत्तनसुत्त, 1.119
3. दूतिया मारापाससुत्त, संयुत्त निकाय, IV (I).5
4. धम्मपद -153,154, 276
5. सुत्तनिपात, रतनसुत्त, 238
6. धम्मपद, सुखवग्गो, 204
7. विपश्यना पत्रिका संग्रह, विपश्यना विशोधन विन्यास, ईगतपुरी
8. बुद्ध जीवन परिचय, विपश्यना विशोधन विन्यास, ईगतपुरी
9. अंगुत्तर निकाय, 1.134
10. दीघनिकाय (2.3.241-272), महापरिनिब्बानसुत्त
11. अरियपरिसनसुत्त, 1.18, पृ सं - 78
12. जीवन जीने की कला, विपश्यना विशोधन विन्यास, ईगतपुरी, पृ सं-47